

पानी बरसने वाला है

विनायक

चित्रांकन : पुलक विश्वास





नेहरू बाल पुस्तकालय

पानी बरसने वाला है

विनायक

चित्रांकन

पुलक विश्वास





नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया



ISBN 978-81-237-6003-2

पहला संस्करण : 2011 *(शक 1932)*

Pani Barasne Wala Hai *(Hindi Original)*

₹ 50.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित

उस शेर को
जिसे जिम कार्बेट ने
सोते हुए मारा था*



अलमोड़ा जिले के मोहन क्षेत्र के जंगल में साही पकड़ते समय एक शेर के सीने में 25-30 कांटे धंस गए थे, जो अंदर ही टूट कर रह गए थे। आगे चल कर घाव पक कर रिसते रहे। चलते समय शेर कराहता रहता था। धीरे-धीरे वह, अपना स्वाभाविक शिकार करने में भी असमर्थ हो गया। कहते हैं कि वह नरभक्षी हो गया था। जिम कार्बेट ने जब उसे पांच फीट की दूरी से गोली मारी थी तो उस समय वह मुंह आसमान की ओर किए हुए निश्चिंत सो रहा था और उसका पेट सांस लेने के कारण फूल व पिचक रहा था। सिर में गोली लगने के बाद उसका पेट स्थिर हो गया।

जिम कार्बेट को एक जानवर को सोते समय मारने का कुछ पश्चाताप अवश्य हुआ था, लेकिन यदि वह उसे छोड़ देता तो...?

मेरी संवेदनाएं उस शेर के साथ हैं, क्योंकि नरभक्षी हो जाना उसकी नियति थी और उसे आदमी के रास्ते को अनचाहे काटना पड़ा था।

Ref. - 'Man-Eaters of Kumaon' by Jim Corbett
5th Chapter - 'The Mohan Man-Eater'
संदर्भ : 'मैन ईटर्स ऑफ कुमाऊं', जिम कार्बेट, अध्याय-5 'द मोहन मैन ईटर'





उस दिन कोहरा नहीं था। सुबह की सुनहरी किरणें पेड़ों से छन-छन कर शेर की मांद के चारों ओर उजाला कर रही थीं। शेर युगल रात्रि की निद्रा पूरी कर मांद के बाहर आ कर बैठ गया था, लेकिन राजा के बेटा-बेटी अपने चारों पैर ऊपर करके मांद के अंदर अब भी सोए पड़े थे।

उसी समय भालू उधर से गुजरा। वह भी शेर दंपति के पास हंसता हुआ चला आया। भालू को देख शेर युग्म के चेहरों पर एक स्वागतम् की मुस्कान फैल गई, लेकिन उसी समय दोनों की दृष्टि रीछ के पीछे-पीछे ही चली आ रही रीछनी पर भी जब पड़ी तो दोनों एक साथ उठ खड़े हुए, ''आइए! इस द्वार पर आपका स्वागत है।''

रीछ जोर से हंस पड़ा, ''जंगल में राजा स्वागत करे, इससे बड़ा सम्मान और क्या हो सकता है!''

''वैसे तुम इसे बस अपनी संगिनी का सम्मान समझना।'' कह कर शेर भी हंसने लगा।

''आज इतनी सुबह-सुबह यह श्यामल जोड़ा किधर निकल पड़ा है?'' शेरनी ने रीछ की ओर ताकते हुए प्रश्न किया।

''कुछ नहीं! झरबेरी के झाड़ों में हम फलाहार करने जा रहे हैं।'' कह कर रीछ अपनी रीछनी को देखने लगा जैसे अपने उत्तर में उसका भी समर्थन चाह रहा हो।

''मछली खाते-खाते जी उकता गया है!'' रीछनी, रीछ को निराश न करते हुए उसकी बात का अनुमोदन करती हुई बोली, ''सोचा, आज कुछ फल-फूल खाया जाए।''

''तुम लोगों का हिसाब-किताब बड़ा अच्छा है!'' शेरनी भी हंस दी। ''दोनों दुनिया का मजा लेते हो! फलाहार भी और मांसाहार भी!''

''अब क्या करें! शेर तो हैं नहीं कि जब चाहा दौड़ा कर एक हिरन पकड़ लिया।'' रीछ हंसते हुए बोला। ''झरबेरी खा कर भी गुजारा करना पड़ता है।''

''चाहें तो आप दोनों भी चल सकते हैं!'' रीछनी ने शेर और शेरनी को भी साथ चलने का न्यौता दिया। ''झरबेरी के झाड़ों के बीच इस समय आपको शूकरों के गुड़गुड़ाते कुनबे भी अवश्य दिखलाई पड़ेंगे।''

''न बाबा! वे तो भूख मिटाने के बस अंतिम उपाय हैं!'' शेर एकदम से तौबा करते हुए बोल पड़ा। ''उन्हें तो ज़रा-सा छू भर दो कि बस चीख-चीख कर सारा जंगल सिर पर उठा लेते हैं।'' हंस कर बोला, ''लगने लगता है कि कहां के बवाल को न्यौता दे दिया!''

''तो फिर विदा लेते हैं।'' रीछ और रीछनी मुस्काते हुए घूमे और दो बड़ी-बड़ी काली गोल गेंदों की तरह ढुनकते चले गए। कुछ दूर जाने के बाद रीछ ने घूमते हुए लगभग चिल्ला कर कहा, ''शाम को झरने के पास नदी तट पर मुलाकात होगी!''

दिन भर उजाला बिखेरने के बाद सूरज की यात्रा अब समाप्त होने ही वाली थी। चारों ओर की पहाड़ियां उसे एक-एक कर विदा दे रही थीं। कुछ स्वर्णिम किरणें अब भी झरने के वेग के साथ नदी में कूद-कूद कर लहरों को बाहों में लपेट रही थीं। झरना जिस जगह हाहाकार करता हुआ गिर रहा था, मछलियां वहीं झुंड बना कर पानी के ऊपर कूद रही थीं। भालू को अपना शरीर हिलाना-डुलाना भी नहीं पड़ता था और मछली हवा में ही उसके हाथ में होती थी। फिर मुंह में, फिर गले के नीचे और फिर अंतड़ियों की भूलभुलैया में!

रीछनी अपने शरीर के कंबल को पूरी तरह पानी से तर किए तट पर सुस्त पड़ी झपकी ले रही थी। जब वह थक गई तो उसके प्राणनाथ ने उसको भी ला-ला कर भरपेट मछलियां खिलाईं और एक अच्छा जीवन साथी होने का परिचय दिया।

तभी तट पर राजा ओर रानी प्रकट हुए। रीछ ने बीच नदी में से सिर उठा कर उन्हें देखा तो हंस दिया। फिर आठ-दस मछलियां पकड़-पकड़ कर बारी-बारी से ला कर उनके सामने रख दीं। फिर बाअदब अर्ज किया, ''राजा-रानी को छोटी-सी भेंट!''

लेकिन शेर ने कुछ चिंता दिखाते हुए रीछनी की ओर ताका और फिर पूछा, ''ये सुस्त क्यों पड़ी हैं?''

''कुछ नहीं! मैंने मछली कुछ ज्यादा खिला दी हैं, बस!'' काला जीव आश्वस्त करते हुए बोला, ''कोई चिंता की बात नहीं है।''

''चलो, यहां से कुछ दूर चल कर बात करते हैं। यहां इनके आराम में विघ्न पड़ेगा।'' शेर भी कुछ फिक्र करते हुए बोला।

तीनों कुछ दूर जा खड़े हुए। भालू ने इधर-उधर ताक कर पूछा, ''और बेटे-बेटी को नहीं लाए क्या?''

''अब राम जाने कब लौटना हो! बस इसी कारण बच्चों को मांद में ही छोड़ना ठीक समझा।'' शेर कुछ चिंतित और कुछ मजबूरी जताता हुआ बोला।



''ठीक ही किया!'' रीछ समर्थन देते हुए कहने लगा। ''अब जंगल, वह जंगल नहीं रहा!'' फिर रीछनी के ऊपर नजर डालते बोला, ''अब इन्हें जगा कर हम भी मांद की ओर चलते हैं। पहुंचते-पहुंचते अंधेरा तो हो ही जाएगा।''

''जल्दी निकल जाओ तो अच्छा रहेगा।'' शेर के सुझाव में आग्रह का पुट भी था।

अब तक शेरनी धीरे से जा कर रीछनी के मुख के पास बैठ गई थी। जाने क्यों वह उस श्यामली को देख-देखकर कातर हो रही थी। प्यार से विह्वल हो उसने धीरे से अपना मुंह सोती हुई उस सुंदरी के मुख पर रख दिया था। उसे सोती हुई रीछनी बहुत प्यारी लग रही थी।

रीछनी ने अचाकचा कर अपना सिर उठा लिया। शेर और रीछ, जो दूर खड़े हुए यह प्रेमालाप देख रहे थे, मुस्कराने लगे।

''पता नहीं कैसे गहरी नींद आ गई थी!'' रीछनी कुछ ऐसे बोली जैसे किसी अपराध के लिए सफाई दे रही हो। ''तुमने मुझे जगाया क्यों नहीं?'' उसने रीछ से लगभग गुस्सा होते हुए पूछा।



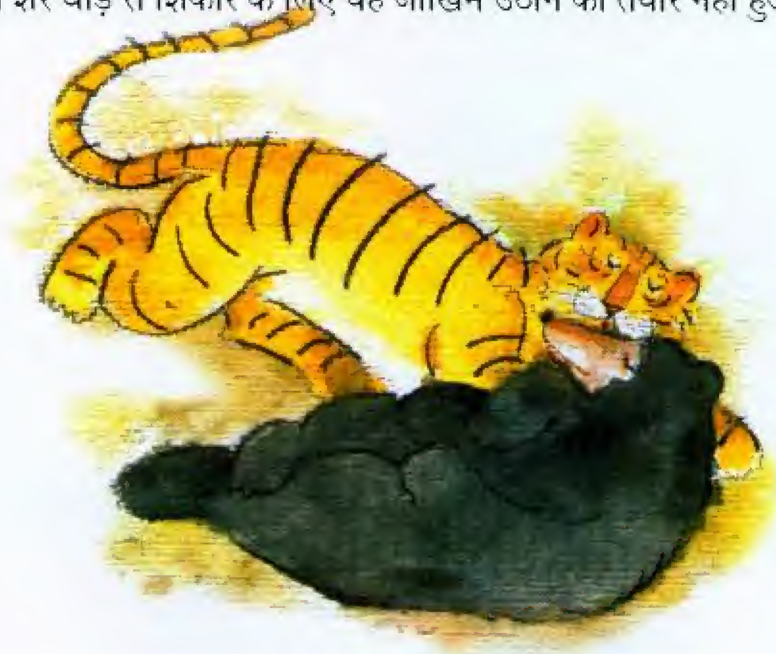
"हम सबने ही इन्हें ऐसा करने से मना किया था।" शेरनी एकदम से बीच-बचाव करती हुई बोल पड़ी। "हमें तो चिंता हो रही है कि तुम इतनी सुस्त क्यों हो?"

"मैं बिल्कुल चंगी हूं! फिक्र मत करो!" रीछनी हंस कर बोली। "कितनी देर तक तो इस झरने के नीचे मैं भी मछलियां पकड़ती रही।"

प्यार की बातें ऐसी छन रही थीं कि दोनों जोड़े अलग होना ही नहीं चाहते थे, लेकिन पसरते हुए अंधेरे ने उन्हें अहसास कराया कि उन्हें अब अपने रास्तों पर निकल जाना चाहिए।

उस दिन शेर ने काफी रात गए एक बहुत बड़े सांभर का शिकार किया। सांभर यानी मृगों की नस्ल में सबसे बड़ी नस्ल के हिरन का और वह भी अपनी मांद से काफी दूर जा कर! शेर और शेरनी ने जब भरपेट शिकार खा लिया तो शेर ने सुझाव दिया कि धड़ के अगले भाग का कुछ हिस्सा काट कर बच्चों के लिए ले चला जाए। इतना वजनी शिकार इतनी दूर खींच कर ले जाना लगभग असंभव-सा था, लेकिन शेरनी का सुझाव था कि वह जा कर बच्चों को वहीं ले आती है, जहां शिकार मारा गया था। साथ ही रात भर वहीं रह कर वे शिकार की सुरक्षा भी कर लेंगे। अब स्पष्ट था, शेर परिवार उतना बड़ा शिकार एक दिन में तो हजम नहीं कर सकता था और यदि उसका कुछ भी हिस्सा वहां असुरक्षित छोड़ा जाता तो सुबह होते ही छुटभैये व मांस खाऊ पक्षी उसे गटक जाते।

लेकिन शेर थोड़े से शिकार के लिए यह जोखिम उठाने को तैयार नहीं हुआ।



दूसरे दिन भोर में देर तक सोने के कारण शेर जोड़ा छोड़े हुए शिकार की ओर जाने में न जानें क्यों अलसा गया। शायद उन्होंने यह मान लिया था कि शिकार अब तक अवश्य साफ हो गया होगा। या हो सकता है कि उनकी अंतरात्मा की उस शक्ति ने जिसे लोग छठी इंद्रीय कहते हैं, उन्हें उधर जाने से रोका हो, जिसका उन्हें प्रत्यक्ष स्वयं भी कोई आभास न हुआ हो।

दो दिन गुजर गए। सब कुछ सामान्य व शांतिपूर्ण रहा। तीसरे दिन शेर और शेरनी फिर सुबह ही सुबह नदी तट पर पहुंचे। देखा, दोनों गोलमटोल जीव, जिन्हें प्रकृति ने शायद एक-दूसरे के लिए ही बनाया है, नदी में छप-छप करते हुए सदा की भांति मछली पकड़े जा रहे हैं। उनकी तन्मयता देख शेर और शेरनी हंसने लगे।

भालू की दृष्टि जब बड़ी बिल्लियों पर पड़ी तो वह भी मुस्करा उठा और धीरे-से रीछनी से बोला, ''मित्र परिवार आया है।''

रीछनी ने भी जब सिर घुमा कर मित्रों को देखा तो गदगद हो कर हंस पड़ी। दोनों काले जीव पानी से निकल कर बाहर नदी तट पर आ गए। आते ही रीछ, शेर से बोला, ''अच्छा हुआ तुम सब आ गए।'' फिर रीछनी की ओर कुछ अर्थ भरी दृष्टि से देखने लगा।

रीछ आगे कुछ बोलता इसके पहले ही शेर, रीछ के हाव-भाव से कुछ सशंकित हो उठा। वह उतावला होकर पूछने लगा, ''सब कुशल तो है? तुम रीछनी को ऐसे क्यों देख रहे हो?''

''क्यों, क्या राजा के सामने कोई अपनी साथिन को निहार भी नहीं सकता?'' रीछ ने बात को हास्य का पुट दे कर शेर का ध्यान मुख्य बात से हटाना चाहा।

''मैं जानता हूं, कोई बात अवश्य है!'' शेर एक दृढ़ मुस्कान चेहरे पर लाते हुए बोला, ''लेकिन तुम दुविधा में हो कि बात मुझे बताओ या नहीं!''

शेरनी एकदम खामोश खड़ी रीछ और रीछनी के चेहरों से उनके मनोभावों को पढ़ रही थी।

''बच्चे आज दिन में भी नहीं हैं तुम्हारे साथ!'' रीछ ने कुछ आश्चर्य से पूछा और साथ ही विषय भी बदलना चाहा।

''सोए पड़े थे। सोचा सोने दें।'' शेर ने छोटा-सा जवाब दिया, लेकिन उसके चेहरे पर पसरी गंभीर जिज्ञासा पूर्ववत् थी।

शेर और शेरनी अब अपने दोनों अगले पैर आगे कर इत्मीनान से वहीं जमीन पर बैठ गए थे। काला युग्म भी आराम से बैठ गया था।

रीछ महसूस कर रहा था, रीछनी समेत सबकी व्यग्र व संशय भरी दृष्टि उसे भेदे जा रही हैं। वह कुछ असहज-सा हुआ, फिर गला साफ कर पूछने लगा, ''तुम दो दिन पहले अपना अधखाया शिकार क्या कहीं छोड़ आए थे?'' पूछते-पूछते भालू ने अपनी पूरी दृष्टि शेर के चेहरे पर टिका दी।

''हां, छोड़ तो आया था!'' शेर की आंखें आश्चर्य से फैल गईं। ''तुम्हें किसने बताया?''





''आज जब इधर आ रहा था तो वह प्यारा जीव, तेंदुआ मिला था।'' भालू उसी तरह शेर को देखते-देखते बोला, ''बता रहा था, वह क्षेत्र तुम्हारा ही है और उधर शिकार तुम्ही करते हो और कि वह छोड़ा हुआ शिकार तुम्हारा ही हो सकता है।'' कहते-कहते भालू ने दृष्टि नीचे कर ली और नीचे देखते-देखते ही बोला, ''तेंदुआ बता रहा था कि उस रात उसका भी पेट भरा हुआ था। इस कारण उसने भी तुम्हारे शिकार को छुआ तक नहीं!'' रीछ आगे यों बोला, जैसे असली रहस्य पर से परदा अब हटा रहा हो, ''तुम्हें नहीं मालूम वह शिकार आज सुबह तक वैसे ही वहीं पड़ा था।'' कह कर भालू फिर आक्रांत-सा होकर शेर को भरपूर दृष्टि से देखने लगा।

शेर और शेरनी गुमसुम हुए सब सुनते रहे। रीछनी उनके चेहरों को कुछ आतंकित-सी होकर देखती रही।

''मैं तो समझा था कि जंगल के चटोरे जीव-जंतु उसे अब तक ठिकाने लगा चुके होंगे।'' शेर बड़ी गंभीर आवाज में धीरे-धीरे बोला। उसके माथे पर चिंता की सिलवटें उभर आई थीं। वह रुका रहा, फिर बड़ी मुश्किल से आगे केवल इतना जोड़ सका, ''आश्चर्य है!''

''ताज्जुब कुछ भी नहीं है। बस थोड़ा समझ लेने की बात है।'' रीछ ने शेर को बात की गंभीरता का अहसास कराते हुए कहा।

कुछ देर तक एक बड़ी विकल खामोशी छाई रही। फिर उसे भालू ही तोड़ते हुए बोला, ''यदि तुम ठीक समझो तो हम सब छिप कर वहां चलें जहां तुम शिकार छोड़ आए थे।''

अभी बात चल ही रही थी कि तेंदुआ भी वहां आ पहुंचा। वह शेर को खोजते-खोजते ही वहां आया था। सभी प्रश्नवाचक दृष्टि से उसे देखने लगे, जैसे वह कोई नई सूचना लाया हो।

''यहां तो सभी लोग मौजूद हैं!'' तेंदुआ सब पर एक सरसरी-सी नजर डालते हुए मुस्करा कर बोला।

''हम सब उस शिकार के पास जाने की बात कर रहे थे जिसे ये अधखाया छोड़ आए थे।'' रीछ ने शेर की ओर इंगित करते हुए तेंदुए से कहा।

''ठीक ही तो है! वहां चलकर हम कुछ तो अनुमान लगा ही सकते है।'' तेंदुए ने प्रस्ताव को उतावला होते हुए तत्काल स्वीकार कर लिया।

जब मित्र मंडली घनी झाड़ियों और वनस्पतियों में छिपती-छिपाती शिकार के स्थान पर पहुंची तो लगभग दोपहर हो चुकी थी। गिद्ध समेत तमाम छोटे-बड़े जानवर शिकार पर टूटे पड़ रहे थे। शिकार करीब-करीब समाप्त हो चुका था और अब बस हड्डियों के लिए छीना-झपटी मची हुई थी। सियार कोई टुकड़ा ले कर भागते तो लकड़बग्घे दादागीरी में छीन लेते और जब वे भागते तो उनके पीछे गिद्ध दौड़ते।



यह दृश्य देख सब अवाक् होकर एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। भालू ने धीरे से कहा, ''अब तो शायद सभी की समझ में बात आ गई होगी!''

''शिकार पर से पहरा आज सुबह के बाद ही हटाया गया है।'' तेंदुआ सब को विश्वास में लेते हुए बोला, ''सुबह जब मैं आया था तो ये जूठनखोर दूर ही घात लगाए बैठे थे।''

''हो सकता है कि मांस सड़ने लगा हो तो सब पहरेदार शिकार को यहीं छोड़ कर चले गए हों।'' रीछ कुछ मसखरी से हंस कर बोला, ''सोचा होगा, अब शेर खराब मांस खाने तो आएगा नहीं!'' कह कर रीछ एकदम फिर गंभीर हो उठा और शेर की ओर मुंह करके भारी आवाज में बोला, ''मौत के मुंह में जाते-जाते बचे हो।''

शेरनी और रीछनी फटी-फटी आंखों से शेर को ताके जा रही थीं, जैसे वे होते हुए भी वहां न हों। शेरनी धीरे से खिसक कर शेर से सट कर खड़ी हो गई। शेर ने उसका स्पर्श महसूस किया तो जैसे सोते से जाग उठा। उसने प्यार से शेरनी को देखा और फिर मुस्करा उठा। अपने में एक विश्वास लाते हुए वह बोला, ''डरो नहीं! इस जंगल में कुछ तो ऐसा बचा है, जिसने हमें और तुम्हें अब तक जीवित रखा हुआ है!''

रीछनी की आंखें नम हो आईं थीं। तेंदुआ भी अपनी रेत हो गई आंखों से शेर को देखे जा रहा था। लगता था जैसे उसे अपना भविष्य भी हिलता हुआ दिख रहा हो। रीछ भी भयभीत-सा होकर अब भी वहीं देखे जा रहा था, जहां गिद्ध एक-दूसरे पर टूटे पड़ रहे थे।

तभी शेर को कुछ याद आया। वह एकदम से चौंक कर बोल उठा, ''बच्चे परेशान हो रहे होंगे! चलो, गुफा पर चलते हैं।''

''हम सभी क्यों न तुम्हारी तरफ ही चलें।'' रीछ परेशान व विचलित शेर युग्म को अकेला नहीं छोड़ना चाहता था। वह सब को साथ ले कर शेर के साथ ही उसकी गुफा की ओर चल पड़ा।

मंडली गुफा पर पहुंची तो देखा कि बच्चे बाहर ही खेल रहे हैं। शेर और शेरनी को देख कर वे भागे आए और उनसे लिपट गए।

शेर-शेरनी भावविह्वल हो कर बड़ी देर तक बच्चों को चूमते-चाटते रहे। रीछ युगल मंत्रमुग्ध-सा होकर उस प्यार भरे संसार को बस देखे जा रहा था, लेकिन फूलदार तेंदुआ अब भी सहज नहीं हो पाया था। वह तो बस चुप बैठा था। उसकी सुडौल-सी लंबी गर्दन बड़ी खूबसूरत लग रही थी।

अगले दिन सुबह शेर और शेरनी जब जंगल में सैर करने निकले तो दोनों शावक भी साथ निकले। शेरनी ने अपने अंदर घुमड़ रही कल की बात को होंठों पर लाते हुए शेर से धीरे से पूछा, ''क्या ऐसा नहीं हो सकता था कि दो दिन इन चटोरे जानवरों की नजर ही हमारे उस शिकार पर न पड़ी हो?''

''पागल हो रही हो क्या?'' शेर कुछ उत्तेजित होकर बोला। ''तुम दो दिन की बात करती हो, यहां दो घंटे भी शिकार को इन टुकड़खोरों से बचा पाना मुश्किल होता है!'' फिर शेरनी की ओर उन्मुख हो कर बोला, ''और इनकी सूंघने की क्षमता! तौबा! तौबा!! मांस की मीलों दूर की महक भी इनकी नाक की परिधि में होती है!'' हंस कर बोला, ''और वह भी जब सड़ने की स्थिति में हो!''

''मैंने तो महज एक अनुमान लगाया था!'' शेरनी धीरे-से सशंकित-सी गहरी सांस लेती हुई बोली।

''रानी! तुम भोली हो!'' शेर भी एक गंभीर उच्छ्वास बाहर छोड़ते हुए बोला, ''वैसे भी मनुष्य का षड्यंत्र हमारी समझ के वश में नहीं है।''

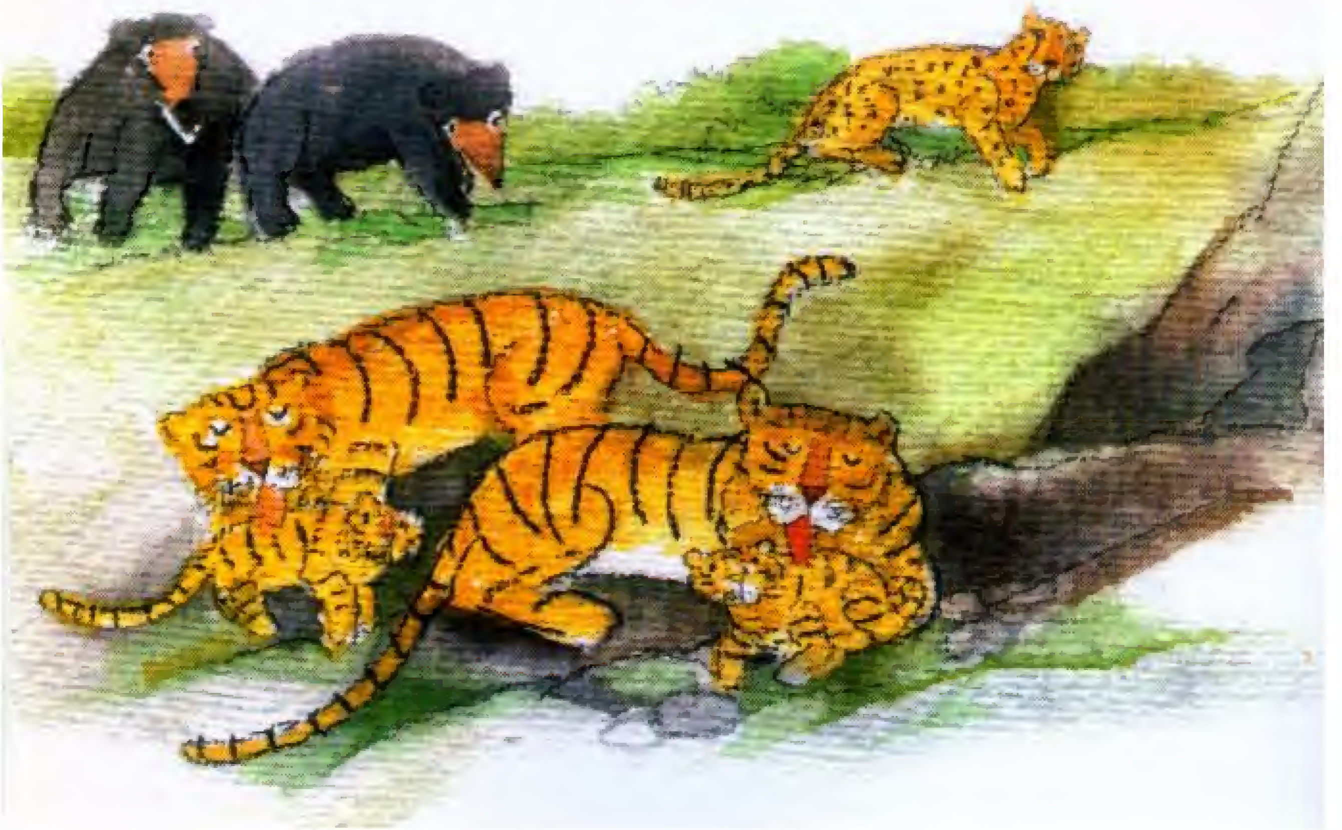
''मेरी बुद्धि में तो कुछ-कुछ बात आ रही है,'' कहते-कहते शेरनी ने आगे-आगे खेलते-कूदते शावकों पर एक भरपूर दृष्टि डाली। फिर वह शेर को ताकते हुए बोली, ''मनुष्य ने दो दिन तक उस शिकार की रखवाली करते हुए वहां घात लगा कर हमारी प्रतीक्षा की होगी कि हम वहां आए और...!'' कहते-कहते शेरनी अचानक रुक कर शेर को देखने लगी। शेर भी ठहर कर उसे देखने लगा। दोनों एक-दूसरे की गंभीर होती दृष्टि कुछ देर तक पढ़ते रहे। फिर शेर ने धीरे से शेरनी की बीच ही में छोड़ी हुई अधूरी बात

पूरी की, "और तीसरे दिन जब मांस सड़ने लगा होगा तो उनकी उम्मीदों पर पानी पड़ गया होगा। वे समझे होंगे कि अब शेर ऐसा मांस खाने के लिए तो आने से रहा।" कह कर शेर मुस्करा उठा, फिर जोड़ा, "और शिकार को छुटभैयों के हवाले करके वे चलते बने होंगे।"

शेर युग्म जंगल में विचरण कर रहा था, तभी फिर किसी सांभर की शंख बजाने जैसी आवाज उन्हें सुनाई दी, लेकिन राजा-रानी ने उधर विशेष ध्यान नहीं दिया। दरअसल अब वे समझ गए थे कि इस बड़े हिरन का शिकार करना मनुष्य के चक्रव्यूह में घुसने जैसा ही है।

फिर भी शेरनी ने व्यंग्य से मुस्करा कर ठिठोली की, "चलो इस सांभर को आज फिर मार कर कहीं छिपाते हैं और फिर उनसे दो दिन रखवाली करवाते हैं!"

"हम मनुष्य नहीं हैं कि षड्यंत्र करें।" शेर ने संजीदा हो कर शेरनी को चेताया।



उस दिन एक छोटे हिरन का शिकार हुआ और शेर का परिवार तृप्त हो कर गुफा में लौट आया, लेकिन अभी शेर गुफा के द्वार से कुछ दूर ही था कि ठिठक कर खड़ा हो गया और संकेत से पूरे कुनबे को रुकने को कहा। उसने शेरनी को इशारे से जमीन पर पड़ी हुई एक सूखी टहनी दिखाई जो बीच से टूट गई थी। उसने फुसफुसा कर कहा कि गुफा छोड़ते समय उसने उस टहनी को ध्यान से देखा था, लेकिन तब वह टूटी हुई नहीं थी। अवश्य ही किसी के पैर के नीचे पड़ कर वह टूटी थी। तात्पर्य यह है कि उनके पीछे वहां कोई आया था। गुफा के द्वार के आस-पास जमीन कुछ सख्त थी और इसी कारण किसी पंजे या पैर का निशान वहां खोजना कठिन था।

शेर किसी संशय को पालना नहीं चाहता था। इसलिए वह कुनबे के साथ तुरंत नदी की ओर चल पड़ा। परिवार अभी कुछ ही दूर गया होगा कि देखा जामवंत अपनी प्राणप्रिया के साथ जुड़-जुड़े वैसे ही ठुनकते चले आ रहे हैं।

शेर परिवार को कुछ सहमा हुआ देख कर श्यामल मित्र ने हंस कर पूछा, ''क्या हुआ? उस दिन के भय से मुक्ति नहीं मिली है क्या?''

''अरे नहीं! कुछ नया घटा है!'' कह कर शेर ने सारा वृत्तांत मित्र जोड़े को सुना दिया।

काले युगल का तो हंसते-हंसते बुरा हाल था। हंसते-हंसते गोलमटोल युग्म बोले, ''क्यों इतना डरते हो! हम दोनों ही तो तुम्हारे दरवाजे पर सलाम करने गए थे!'' फिर भालू कुछ याद करते हुए बोला, ''और मेरे पैर के नीचे ही पड़ कर एक लकड़ी भी टूट गई थी।'' फिर हंस कर बोला, ''और तब सचमुच मुझे अपने वजन पर गर्व हुआ था!''

जामवंत की बात सुनते ही शेर परिवार के चेहरों पर उड़ रही हवाइयां एकदम रफूचक्कर हो गईं। उनके चेहरे प्रफुल्लता से भर उठे।

"तो तुम डाका डालने पहुंच गए थे शेर के घर?" शेर ने हंसते हुए कहा। "वैसे तुम्हें बता दूं कि मैं कभी अपनी गुफा पर शिकार नहीं रखता!"

"जंगल का कौन मूर्ख जानवर ऐसा है, जो राजा के घर पर डाका डालेगा!" जामवंत हंसते हुए बोले, "हां! चोरी की बात और है, जो मुझे आती नहीं है!"

"खैर छोड़ो! तुमने आज हमारी बड़ी भारी चिंता दूर कर दी!" शेर एक गहरी सांस लेते हुए बोला, "क्या इसके लिए धन्यवाद देना पड़ेगा?"

"धन्यवाद तो आदमियों के लिए छोड़ो! वही इस वस्तु को खाते और पकाते हैं!" भालू ने व्यंग्य बाण छोड़ा। फिर शेरनी को देखते हुए मुस्करा कर बोला, "जंगल में तो शिकार ही चलता है! क्यों रानी साहिबा?"

"वह तो मैं तुम्हें दूंगी ही! मेरा पक्का वादा रहा।" शेरनी ने बड़ी आत्मीयता व अनुग्रह के साथ काले युग्म को आश्वस्त किया।

मित्र से मिलने के पश्चात् शेर निश्चिंत हो कर अपनी गुफा में लौट आया। काला जोड़ा भी ठुनकता हुआ अपनी कंदरा की ओर चला गया। और इस तरह जंगल में एक दिन और हंसी-खुशी से बीत गया।



अगले दिन कुछ अद्‌भुत, लेकिन दुःखदाई घटना घटी! बस, आतंकित कर देने वाली! शेर सवेरे पुनः शावकों को गुफा पर गहरी निद्रा में छोड़ कर शेरनी के साथ झरने की ओर चला गया, लेकिन दूर से ही वहां का नजारा देख कर पीली बिल्लियां गश खा गईं। तमाम आदमी झरने के निकट ही नदी में जाल डाल-डाल कर मछलियां पकड़ रहे थे। वे कुछ और आगे खिसके ही थे कि देखा रीछ और रीछनी भी एक झाड़ के पीछे खड़े फटी-फटी हुए आंखों से सब देखे जा रहे थे। शेर युगल भी थोड़ा और सरका और उनसे सट कर खड़ा हो गया। सब ने एक-दूसरे के होने का अपने जिस्म पर आभास तो किया, लेकिन अपनी पथराई आंखों से किसी ने ताका किसी को नहीं!

एक घुटन भरी चुप्पी चारों वन्यजीवों के आस-पास छाई रही। नदी तट पर मनुष्यों की खुशियों का कोलाहल और रेला था। जैसे ही मछलियों की नई खेप निकाली जाती, हर्षोल्लास के शोर से पूरा आसमान गूंज उठता। तभी एक फुसफुसाहट रीछ के मुंह से किसी कराह की तरह निकली, "ये लोग इन्हीं जालों में भर कर क्यों नहीं यह सारा जंगल उठा ले जाते!" वह फिर से धीरे से फुसफुसाया, "न आंखें होंगी, न दुखेंगी!"

भारी दिल और भारी कदमों से चारों जीव वहां से लौट पड़े। बस कुछ ही कदम बढ़े होंगे कि शेर ने भालू की नम आंखों से ढरकते हुए कुछ आंसू देखे। वह एकदम से ठिठक



कर रुक गया। फिर भालू को रोक कर पूछने लगा, "यह क्या?तुम रो रहे हो?" शेरनी भी जल्दी से भाग कर उसके पास आई। उसके मुंह के पास मुंह ले जा कर वह उसे समझाने लगी, "दिल इतना तो छोटा न करो! हम लोग हैं न!"

पास आ कर रीछनी भी अवरुद्ध हो रहे कंठ से कहने लगी, "तुम रोओगे तो मेरा क्या होगा?" रीछनी, रीछ का दुःख देख कर अपने को संभाल न पाई। इस कारण वह धप्प से जमीन पर बैठ कर बिलखने लगी।

पूरा माहौल रीछ के लिए असह्य हो उठा था। उसने रीछनी के पास आ कर दोनों हाथों से उसका सिर अपने कलेजे से लगा लिया। फिर वह सिसकते हुए बोला, "मैं नाहक भावुक हो गया था!" फिर उसके आंसू पोछते हुए उसने प्यार से कहा, "तुम मत रोओ! कोई भी रीछ अपनी रीछनी को रोते हुए नहीं देख सकता!"

शेर और शेरनी भी रीछनी के पास बैठ गए। शेर ढांढ़स बंधाते हुए बोला, "जंगल में एक मछली ही तो नहीं है खाने को! और भी बहुत कुछ है!"

रीछनी कुछ सुस्त पड़ रही थी। वह जमीन पर सिर रख कर पूरी तरह निढाल हो कर लेट गई थी। रीछ की आंखें शुष्क हो उठी थीं। जैसे वहां कोई रेगिस्तान आ बसा हो। शेर की ओर मुंह घुमा कर वह भर्राए हुए गले से बोला, "मैं आज बताता हूं कि... इनके पेट में बच्चा पल रहा है।" कहते-कहते उसकी आंखों से फिर आंसू बह चले। वह रोते-रोते बोला, "हम लोग जब यहां पर आए तो ये बहुत भूखी थीं।"

पलक झपकते ही शेर की आंखों से चिंगारियां बरसने लगीं। वह क्रोध से उठा और तड़पता हुआ नदी के किनारे जा कर जोर से दहाड़ा। जैसे चिल्लाया हो, "मेरा जंगल खाली करो!"

मनुष्यों में भगदड़ मच गई। जो कुछ जहां जैसा था, उसे वैसा ही छोड़ वे जान ले कर भागे। दो-एक के पास बंदूकें थीं। वे उसे इधर-उधर दागते हुए भागे।

चारों जीव जब नदी तट पर गए तो ढेरों मछलियां बिखरी पड़ी थीं। वे धीरे-धीरे चुपचाप खाते रहे। फिर वे उठे और भारी कदमों से अपने-अपने ठिकानों पर चले गए।

चलते समय शेरनी ने निकट जा कर रीछनी को प्यार किया। फिर धीरे से उससे बोली, ''कल निकलना मत! हम लोग तुम्हारे पास शिकार ले कर आएंगे।''

शेर और शेरनी ने रास्ते में दो मुर्गों का शिकार किया, जो उनके बच्चे के लिए काफी था।

अगले दिन रीछनी और भी निढाल व सुस्त हो गई थी। वह कंदरा में एकदम पीछे की ओर दीवार से सटी हुई लेटी थी। भालू उसका सिर अपनी गोद में लिए हुए सहला रहा था। भालू ने उसके कान के पास मुंह ले जा कर धीरे से पूछा, ''भूख तो नहीं लग रही है?''

रीछनी आंखें खोल कर मुस्करा उठी। भालू के चेहरे की तरफ देखा, फिर सिर हिला कर बताया कि उसे भूख बिल्कुल नहीं लगी है। रीछनी ने फिर करवट बदली और धीरे-से फुसफुसाई, ''तुम मुझे कितना प्यार करते हो!'' कहते-कहते रीछनी की आंखें डबडबा आईं।

रीछ कातर हो कर इधर-उधर देखने लगा। वह रीछनी की दशा देख कर इतना तो समझने ही लगा था कि अब किसी भी क्षण वह प्रसव वेदना से तड़पने लगेगी और कभी भी नन्हे बच्चे इस संसार में आ सकते हैं।

रीछ विह्वल-सा हो रहा था और अपने को कुछ-कुछ बेबस-सा भी महसूस कर रहा था। वह सोच रहा था कि अभी सुबह-सुबह रीछनी को यदि भूख नहीं भी लग रही है, तो भी कुछ देर पश्चात् तो वह अवश्य भूखी हो जाएगी। तब क्या होगा! वह उसे इस दशा में अकेली छोड़ कर खाने की खोज में कहीं जाना भी नहीं चाहता था। उसी समय लगा कि जैसे रीछनी ने उसके चेहरे से उसके मन में उठ रहे भावों को पढ़ लिया हो। उसने अपने एक हाथ से रीछ का एक हाथ पकड़ कर अपने सीने पर रख लिया और फिर उसे धीरे-से दबाया, जैसे संदेश देना चाह रही हो, ''नाहक क्यों परेशान हो रहे हो?सब ठीक हो जाएगा!''

सुबह अब जा ही रही थी और दोपहर ने लगभग कदम रख ही दिया था। तभी शेर और शेरनी कंदरा के द्वार पर प्रकट हुए। वे एक बड़े-बड़े सींगों वाला चीतल मार कर लाए थे। साथ में दोनों शावक भी थे।

शेर ने रीछ का सेवाभाव देखा तो हंसने लगा और बोला, ''सहचरी को प्यार कैसे किया जाता है, मुझे तुमसे सीखना पड़ेगा!''

शेर और शेरनी को देख कर श्यामल युग्म के चेहरे भी खुशी से खिल उठे। रीछनी जब उठने को हुई तो रीछ ने उसका सिर हौले से नीचे दबा दिया, ''तुम नहीं!'' शेर और शेरनी ने भी उसे उठने से मना किया, लेकिन रीछनी मानी नहीं। एक हाथ का सहारा लेकर वह धीरे-धीरे उठ कर बैठ ही गई। उसका बढ़ा हुआ पेट करीब-करीब जमीन पर टिक रहा था।

रीछ आगे खिसक जब रीछनी को गोद में समेटते हुए, उसे अपने सीने का टेक देने लगा तो रीछनी ने यह कहकर मना कर दिया कि वह अपने-आप आराम से बैठ लेगी।

यह दृश्य देख कर शेर भावविभोर होकर बोला, ''सच! तुम अपनी रीछनी को बहुत प्यार करते हो!''





“अरे नहीं! मैं इसके लिए कुछ नहीं कर पाता हूं!” फिर आंख के कोने में छलक आए अश्रुकण को उंगलियों से पोंछते हुए काला जीव भर्राए गले से बोला, “इसने मुझे जितना कुछ दिया है, उतना शायद ही...!” कहते-कहते शब्द उसके गले में अटकने लगे।

“अरे, यह खुशी का समय है! नन्हे बच्चे इस पृथ्वी पर आने वाले हैं।” शेरनी खुश होती हुई पुलक कर बोली, “अब संजीदा बातें बंद होनी चाहिए।” फिर शेर की ओर देखती हुई मुस्करा कर बोली, “शिकार को खींच कर कंदरा के अंदर सब के करीब ले आओ। सब लोग अंदर ही दावत खाएंगे।”

रीछनी अपने भारी हो रहे पेट को संभालती हुई धीरे-से सरक कर सबके और निकट आ गई।

दोपहर में खूब खुशी-खुशी दावत खाई गई। सिंह शावक तो दुगना मजा ले-ले कर शिकार खा रहे थे। पेट भर जाने के बाद वे कंदरा के बाहर जा कर खेलने लगे।

कंदरा के अंदर अब दावत के बाद वाली मीठी-मीठी चर्चाएं होने लगीं। एक-एक कर सभी जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव बताने लगे। विशेषकर ऐसे, जिन्हें सुन-सुन कर पेट में हंसते-हंसते बल पड़ जाएं।

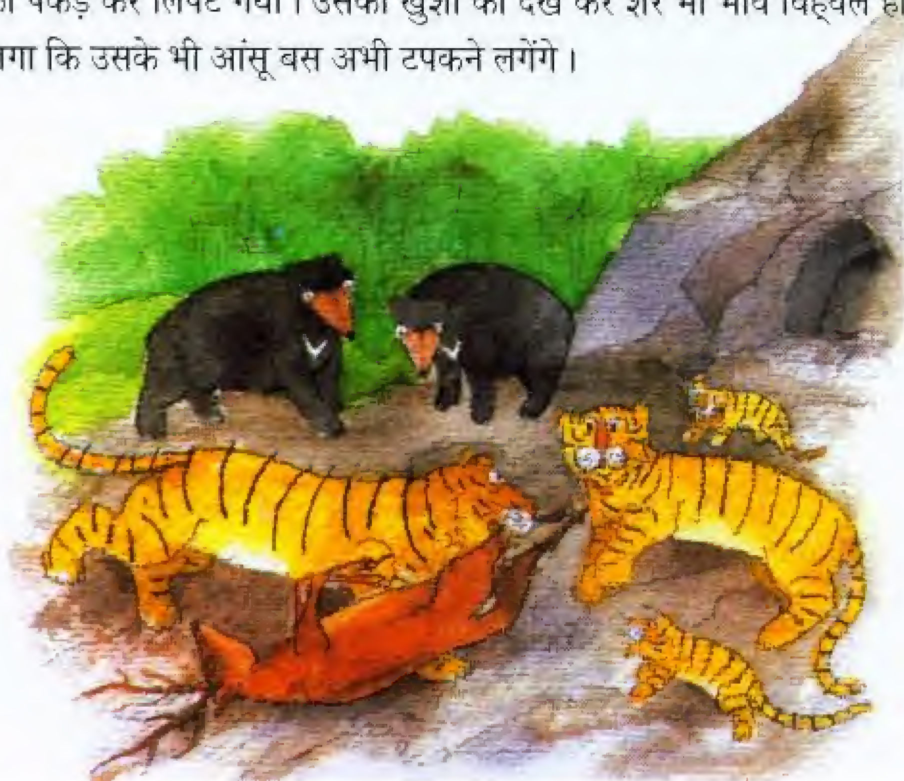


भालू बताने लगा कि कैसे एक अंधेरी हो रही शाम को वह मधुमक्खी का छत्ता देख कर एक पेड़ पर चढ़ गया, लेकिन वहां जा कर देखा तो एक आदमी काला कंबल ओढ़े हुए बैठा था।

शेर भी कुछ बताने जा रहा था कि तभी रीछनी के पेट में धीरे-धीरे प्रसव वेदना होने लगी। देखते-देखते वेदना इतनी बढ़ी कि वह छटपटाने लगी। शेर बाहर बच्चों के पास भाग आया। रीछ भी घबराया हुआ बाहर आ कर शेर को यूं ताकने लगा कि जैसे अभी रो देगा, और कि जैसे पूछ रहा हो– बोलो अब मैं क्या करूं?

शेरनी अंदर कंदरा में रीछनी का सिर सहला-सहला कर उसे ढांढ़स बंधा रही थी, ''मां होने का सुख पाने के लिए तुम्हें यह पीड़ा तो सहनी ही पड़ेगी।'' फिर रीछनी के मुंह के पास अपना मुंह ले जा कर मुस्करा कर बोली, ''तुम्हारी कोख से प्रकृति की नई संतति जन्म ले रही है! तुम भाग्यशाली हो!''

तभी शेर और रीछ ने कंदरा के अंदर से दो बाल जामवंतों के कूं-कूं करने की आवाज आती हुई सुनी। सुनते ही भालू खुशी के मारे जोर-जोर से रोने लगा। वह दोनों हाथों से शेर को पकड़ कर लिपट गया। उसकी खुशी को देख कर शेर भी भाव विह्वल हो उठा। उसे लगा कि उसके भी आंसू बस अभी टपकने लगेंगे।



री छनी मंत्रमुग्ध हो कर दोनों बच्चों को बगल में दुबकाए प्यार से बस एकटक निहारे जा रही थी। वह पल भर को भी अपनी दृष्टि उन पर से नहीं हटा पा रही थी। कभी-कभी भावातिरेक में वह उन्हें चूम लेती थी।

शेरनी बाहर आ कर शेर से बोली, ''चलो, अब हम चलते हैं। अब ये अकेले अपना कुनबा संभालें!'' फिर हंस कर ठिठोली से जोड़ा, ''और अपनी रीछनी को प्यार करें!''



फिर शैतानी से आंखें बड़ी-बड़ी करके बोली, ''आखिर इसने इन्हें दो बच्चों का बाप बनाया है!''

दूसरे दिन जब शेर परिवार शिकार ले कर फिर-से रीछ की कंदरा पर आया तो सूरज सिर के ऊपर से कुछ आगे सरक चुका था। रीछनी अपने दोनों बच्चों को कलेजे से चिपकाए कंदरा की पिछली दीवार से सटी हुई गहरी निद्रा में सो रही थी। रीछ द्वार के पास लेटा हुआ जाड़े की धूप का मजा ले रहा था और शायद पहरेदारी भी कर रहा था, लेकिन उसने दोनों हाथों से आंखों को ढंक रखा था। संभवतया तेज रोशनी से आंखों को बचाने के लिए। तभी उसे बाहर कुछ खड़-खड़ की आवाज सुनाई दी। वह एकदम से उठ कर खड़ा हो गया। फिर बड़ी सावधानी से इधर-उधर देखा और पाया कि शेर परिवार शिकार मुंह से घसीटता हुआ चला आ रहा है। बच्चे भी उनके आगे-पीछे खेलते-कूदते हुए मौज से चले आ रहे हैं।

शेर ने जब द्वार से ही अंदर रीछनी को सोते हुए देखा तो रीछ से धीरे से बोला, ''सब लोग बाहर बैठते हैं। उन्हें आराम से अंदर सोने दो।''

शेरनी ने भी जब अंदर रीछनी और बच्चों को आपस में लिपटे हुए सोते देखा तो उसका भी ममत्व छलक उठा। फिर तो वह अपने को रोक न सकी। वह दबे पांव अंदर जा कर उन्हीं के पास बैठ गई। उसका मातृत्व जब और उफान पर आया तो वह धीरे-से दोनों बच्चों को चाटने लगी। दोनों बच्चे कुनमुना कर मां से और सट गए। रीछनी ने सोते-सोते ही उतानी लेट कर बच्चों को छाती पर घसीट लिया और थपकी देने लगी। शेरनी की आंखों में प्यार के आंसू छलक आए। वह धीरे से उठी और बिना कोई आहट किए बाहर निकल आई।

''बड़े प्यारे बच्चे हैं!'' शेरनी चमक उठी आंखों से शेर से कहने लगी।

''सुबह से मां को कुछ दिया या नहीं?'' शेर ने बहुत दबी आवाज से भालू से पूछा।

"कुछ ही दूर शहद का एक बहुत बड़ा छत्ता लगा हुआ था।" रीछ एक तृप्ति भरी मुस्कान चेहरे पर लाते हुए शेर और शेरनी से बोला, " बहुत दिनों से उसे इसी दिन के लिए बचा रखा था। आज सुबह उसे ला कर इसे ढेर सारा शहद दिया है।" फिर हंस कर बोला, "मां ने बच्चों को भी चटाया है!"

सुन कर शेरनी हंसने लगी। बोली, "तुम जितने अच्छे प्रेमी हो, उतने ही अच्छे पिता भी बनोगे!" फिर एक विश्वास भरे लहजे में उसने कहा, "मुझे मालूम है!"

"कुछ मेरी तारीफ में भी तो कहो," शेर ने शेरनी की ओर मुंह घुमाते हुए कहा, "आखिर मैं भी तो अपनी इस स्वर्ण सुंदरी और इसके बच्चों के लिए कुछ करता हूं!"

"तुम क्रोधी भी तो हो!" कह कर शेरनी ने एक प्यार भरी मुस्कान दी। फिर अपना मुंह शेर के कान के पास ला कर फुसफुसाई, "और सच कहूं तो तुम इतने कोमल और भावुक प्रेमी तो कभी नहीं रहे!"

"पीली बिल्लियों में यह क्या खुसर-पुसर होने लगी?" भालू कुछ शिकायत भरे लहजे में बोला, "हमें इतना पराया तो न समझो कि बात छिपानी पड़े!"

"ये मेरे कान में भी तुम्हारी ही तारीफ कर रही थीं!" शेर एक मुक्त हंसी हंस कर बोला, "कह रही हैं कि मैं तुम जैसा प्रेमी तो नहीं बन सकता!"

"अगर शेर प्रेमी होने लगे तो जंगल का तो सब अनुशासन ही बिगड़ जाएगा!" रीछ बात की दिशा बदलते हुए हंस कर बोला। "अब यह काला जीव भी तो शेर नहीं हो सकता है, प्रेमी भले ही बन जाए!" कह कर रीछ जोर से हंसने लगा।

इस बीच रीछनी सो कर उठ गई थी और लेटे-लेटे ही बच्चों को स्तनपान कराने लग गई थी। शेरनी भी उसके पास जा कर बैठ गई और नन्हे-मुन्नों को होंठों से स्पर्श करने लगी। फिर रीछनी का सिर सहलाते हुए उसकी आंखों में झांक कर कहने लगी, "तुम्हारा साथी तुम्हें इतना-इतना प्यार करता है, तुम कैसे इस प्यार को समेट पाती हो?"

रीछनी ने जब शेरनी की आंखों की गहराई में झांका तो उसकी अपनी ही आंखें सजल

हो उठीं। फिर रुंधे गले से बहुत मद्धिम आवाज में बोली, ''इस जीवन में मेरे पास बस यही है!'' फिर शेरनी से अश्रु भीगे स्वर में पूछा, ''तुम बताओ, क्या मैं धन्य नहीं हूं?''

इसी समय रीछ कंदरा के एक कोने से वहां बचा कर रखा हुआ शहद से भरा छत्ते का एक टुकड़ा उठा लाया और रीछनी की ओर बढ़ाते हुए बोला, ''लो, अब इसे खा लो।''

''नहीं! अब तुम्हें इसे लेना होगा!'' रीछनी कुछ क्रोध दर्शाती हुई प्यार भरे उलाहने से बोली। ''सुबह से उपवास ही किया है! बस मेरी ही फिकर में लगे हो!''

''अरे तुम समझती क्यों नहीं हो, मुझे थोड़े ही बच्चों को दूध पिलाना है!'' रीछ ठठा कर हंसते हुए बोला। फिर शेरनी की ओर देख कहने लगा, ''जंगल की रानी! अब आप ही इसे समझा सकती हैं!''

''शहद कोई खराब होने की चीज तो है नहीं!'' शेरनी ने बीचबचाव की मुद्रा में रीछ से कहा। ''इसे बाद के लिए रखो! इस समय तो शिकार आया है! इसी को सब खाएंगे!''

शिकार का नरम मांस शावकों और रीछनी को दिया गया और बाकी जंतु शिकार का अन्य भाग खाने लगे। रीछ शिकार खाते-खाते ही बोला, ''जंगल के राजा से मित्रता हो जाए तो समझो लाभ ही लाभ है!''

''इस गलतफहमी में मत रहना!'' शेर कुछ हंस कर बोला। ''राजा की जान के पीछे तमाम शिकारी पड़े रहते हैं! उसी घेरे में उसके मित्र भी आ सकते हैं!''

''अब ऐसे खुशी के अवसर पर मनहूस बातें मत करो!'' रीछ तनिक क्रुद्ध होते हुए बोला। पल भर को वह चुप रहा। फिर स्वयं भी कुछ चिंतित होते हुए वह कहने लगा, ''पता नहीं मनुष्यों की हम जानवरों से क्या दुश्मनी है!''

बातें सुन कर शेरनी भी कुछ विचलित हो उठी। हताश होती-सी बोली, ''हमें तो रात-दिन शावकों की ही चिंता सताए रहती है।'' फिर रीछनी की ओर मुंह घुमा कहने लगी, ''अगर हम नहीं रहे तो बच्चों का क्या होगा!''

रीछनी सब की बातें सुन-सुन कर कुछ परेशान तो हुई, लेकिन दिल कड़ा करके उसने चर्चा को नई दिशा दे दी। बोली, ''कल से मौसम कुछ अधिक ठंडा हो गया है और बादल

भी दिखाई पड़ने लगे हैं।'' फिर दूर पहाड़ों पर नजर दौड़ाती हुई कहने लगी, ''लगता है, वहां बारिश हुई है या बर्फ गिरी है!''

''हां! पानी पड़ने के कुछ आसार तो यहां भी दिखाई पड़ने लगे हैं!'' शेर ने मुंह उठा कर आसमान में बादलों की ओर ताकते हुए रीछनी की बातों का समर्थन किया। फिर रीछनी को कुछ सचेत करते हुए बोला, ''तुम इन नवजातों का ध्यान रखना। इनके लिए तो यह पहली ही ठंडी है।''

शाम ढलने लगी थी। शेर ने फिर ऊपर ताका। आसमान में अब सचमुच बहुत गहरे बादल आवाजाही कर रहे थे। ''बैठक समाप्त होनी चाहिए! अब विदा की बेला आ गई है।''

रीछनी ने पूरे मातृत्व भाव से कहा, ''बच्चे साथ हैं! जल्दी निकल जाओ तो ठीक होगा।'' बच्चों को देख कर फिर बोली, ''इस कड़ाके की ठंड में अभी इनका भीगना ठीक नहीं है!''

''अब कल का क्या कार्यक्रम होगा?'' शेर ने रीछ से पूछा।

''तुम सब परेशान मत होना।'' रीछ ने शेर और शेरनी को समझाया। ''ये भी कल निकलेंगी और कुछ फल-फूल खा आएंगी।'' फिर हंस कर कहने लगा, ''कल यह मोटा बाप बच्चों की रखवाली करेगा।''

''और बच्चे भूख से रोने लगेंगे तो यह बाप क्या करेगा?'' शेरनी ने कुछ व्यंग्य और कुछ हास्य से पूछा।

''जैसे बच्चे पालने का काम केवल माता ही कर सकती है! मैं उन्हें शहद चटाऊंगा!'' रीछ बड़ी मौज में बोला। फिर शेरनी को याद दिलाया, ''भूल गईं क्या? तुम्ही ने तो दिन में शहद रखवा दिया था!''

शेर शावक इसी बीच मां से लिपट कर उसके कान में खुसर-पुसर करने लगे थे। उन्हें अब अपने घर की याद सताने लगी थी।

शेरनी ने पूरे बदन को रबड़-सा पीछे खींच कर उसे चुस्त किया। फिर खड़ी हो कर शेर की ओर मुंह घुमाते हुए बोली, "राजा! अब तुम भी चलो।"

शेर उठते-उठते रीछ से बोला, "तुम संकोच मत करो। कहो तो कल शिकार ले कर हम फिर आ सकते हैं।"

"अरे, नहीं-नहीं! अपने एहसानों से इतना तो मत दबाओ!" रीछ कहने लगा। "तुम तो अपने ही हो! आवश्यकता पड़ी तो दौड़े चले आएंगे।"

शेर परिवार के जाने के पश्चात् रीछ युग्म कंदरा के अंदर आ गया और नए दुधमुंहे आगंतुकों को दुलराने लगा।



कई दिनों के बाद उस दिन शेर और शेरनी झरने पर आए तो जैसी कि आशा थी, केवल रीछ को ही पानी में घुसकर मछलियां पकड़-पकड़ कर हजम करते हुए पाया। जब रीछ की दृष्टि नदी तट पर खड़े शेर युग्म पर पड़ी तो वह पानी से निकल कर उनके पास आ गया।

"तुम्हारे बाल-बच्चों के क्या हाल हैं?" रीछ के पास आते ही शेर ने मुस्करा कर पूछा। उसने 'बाल-बच्चों' शब्द पर बड़ा जोर दिया था, जैसे कहना चाह रहा हो— अब तो तुम भी बाल-बच्चों वाले हो गए हो।



"सब ठीक है, बस...!" रीछ महोदय जब कुछ कहते-कहते उदास होकर चुप हो गए तो शेर और शेरनी दोनों चौंक कर पूछने लगे, "रुक क्यों गए? कोई बात है क्या?"

एक लंबी सांस खींचते हुए काला जीव बोला, "यही कि रीछनी के बिना कहीं भी आना-जाना अच्छा नहीं लगता!" कुछ सकुचाते व कुछ और उदास होते हुए वह कहने लगा, "उसके बिना तो यह झरना काटने को दौड़ता है।" यह कह कर रीछ खोया-सा कहीं और देखने लगा।

शेरनी ने एकदम से एक अर्थभरी दृष्टि से शेर की आंखों में झांका कि जैसे याद दिला रही हो, "मैं कहती थी न, इससे अच्छा प्रेमी मिलना मुश्किल है!"



''चलो, कुछ ही दिनों की बात है!'' शेर बड़े अपनत्व से समझाते हुए बोले। ''उदास क्यों होते हो! यह सब उसकी और बच्चों की भलाई के लिए ही तो तुम कर रहे हो!''

''तुम कहो तो तुम्हारे न रहने पर मैं उसके पास जाकर बैठ जाया करूं?'' शेरनी ने बहुत भावुक होते हुए कहा। ''हम दोनों का दिल बहलेगा और उसका अकेलापन भी दूर होगा।''

''अब वह अकेली कहां है!'' रीछ के चेहरे पर एकदम से खुशी दौड़ गई। प्रफुल्ल होते हुए वह बोला, ''बस, रात-दिन अपने दोनों बच्चों में ही मगन रहती है! मुझे तो उसने भुला ही दिया है!''

''तो अब क्या तुम मछली पकड़ कर यहां से ले जाया करोगे?और कितनी मछली ले जा पाओगे?'' शेर ने अचरज से पूछा तो शेरनी भी उत्तर सुनने के लिए रीछ का मुंह देखने लगी।

''अरे कहां! ऐसा कहां संभव है!'' रीछ, शेर और शेरनी दोनों पर दृष्टि डालते हुए कहने लगा, ''मैंने कल बताया था न कि जब मैं बच्चों की रखवाली करूंगा तो वह बाहर निकला करेगी।'' फिर हंस कर बोला, ''और जब वह बच्चे संभालेगी तो मैं यहां मछलियों के पीछे भागता हुआ तुम्हें मिलूंगा।''

शेर, रीछ की बात सुन कर मुस्करा उठा। बोला, ''बड़ी अच्छी व्यवस्था बना रखी है!''

''भूल गए! यही सब तो तुम भी किया करते थे।'' शेरनी ने हंसकर शेर को अपने बीते हुए दिनों का स्मरण कराया।

''फिर भी तो तुम कहा करती हो कि मैंने कभी तुम्हारी सेवा नहीं की!'' शेर ने अपनी प्रियतमा पर पलटवार किया।

''करते तो सब कुछ थे!'' शेरनी ने मुंह उठा कर शेर को भरपूर नज़रों से देखा और बोली, ''आज भी करते हो! बस ज़रा गुर्राया कम करो।''

''कहो तो मैं मुंह ही न खोला करूं!'' शेर ने पता नहीं ठिठोली की या कि अपनी गहरी मुस्कान से व्यंग्य भी किया।

''ऐसा करोगे तो सियार भी तुम्हारी दुम खींच कर भागा करेंगे!'' शेरनी जोर से खिलखिला उठी।

''अब यह वादविवाद खत्म करो।'' रीछ बीच में कूदते हुए बोला। ''और चलो, मेरी श्यामली के हालचाल ले आओ।''

जब रीछ, शेर जोड़े के साथ अपनी कंदरा पर आया तो देखा कि मां कंदरा पर बैठी एक बच्चे को आगे गोद में लिटाए हुए है और दूसरे को दोनों हाथों से हवा में उछाल-उछाल कर वात्सल्य का आनंद ले रही है। उसे देख कर शेरनी जोर से हंस पड़ी। ''मैं न तो ऐसे बैठ सकती हूं और न ही इस तरह बच्चे उछाल सकती हूं।''

भालू ने भी हंस कर उत्तर दिया, ''यह सुख सब को नहीं मिलता!'' फिर वह शेरनी की ओर उन्मुख हो कर बोला, ''इसके लिए तो आप को अपना गोरा रंग काला करना पड़ेगा।''

''जंगल की रानी के बासंती रंग को तुम काला मत बनाओ।'' शेर भी हंसी में शामिल हो गया, ''हमारे पास जो है, हम उसी में खुश हैं।''

''क्या हम काले लोग बुरे हैं?'' रीछ ने तनिक आंखें फैलाते हुए पूछा।

''तुम लोग तो सबसे प्यारे हो!'' शेर कुछ विनम्र हो कर समझाते हुए बोला। ''लेकिन तुम्हें यदि कोई पीला बना दे तो शायद इतने सुंदर न लगो।''

''बड़ी समझदार बातें करने लगे हो!'' रीछ थोड़ा अचरज से बोला। फिर शेरनी से पूछा, ''इस शेर को यह सब सीख तुमने दी है क्या?''

''कुछ तो संगत का असर पड़ता ही है!'' कह कर शेरनी फिर जोर से हंस पड़ी।

रीछनी ने अब दोनों बच्चों को बगल में ही जमीन पर लिटा दिया था और वे 'कीं-कीं' करने लगे थे। फिर शेरनी को देखती हुई वह उलाहने से बोली, ''मुझे तो लगा था कि तुम सबने मुझे भुला ही दिया है।''

''अरे, ठीक ही सोचा था तुमने!'' रीछ, शेर युग्म की तरफ इशारा करते हुए बोला। ''आज भी इन सबको पकड़ कर मैं ही लाया हूं!''

''तब तो मैं बात नहीं करती इन सुनहरे बालों वाले बिलौटों से!'' कह कर रीछनी ने रूठने का अभिनय किया और अपने एक बच्चे को फिर से गोद में उठा लिया।

''तुम मत करो बात!'' शेरनी जा कर जमीन पर लेटे हुए बच्चे के पास बैठ गई। ''मैं तो इस दुलारे को खिलाने आई हूं।''

कुछ देर भालू के बच्चों को खिलाने और दुलराने के बाद शेर और शेरनी वहां से चलने को हुए। वे अपने बच्चों को छोड़ कर सुबह निकले थे और अब उन्हें उनकी चिंता सताने लगी थी। वैसे भी अब दोपहर करीब ही थी।

रीछ ने शेर परिवार के जाने की उत्सुकता देखी तो शिकायत करने लगा, ''यह तो कोई बात नहीं हुई! अभी-अभी आए और जाने की बात करने लगे!'' रीछ के लहजे में बड़ा अपनत्व था। उसमें उसका निश्छल प्यार भी झलक रहा था।

''क्या करें! बच्चे पीछे छोड़ आए हैं!'' शेर ने कुछ चिंतित होते हुए कहा। जैसे उसका दिल जाने को न कर रहा हो, लेकिन विवश हो।

''देखो! मैं एक बात समझाती हूं तुम दोनों को।'' कह कर रीछनी ने शेर और शेरनी को बहुत गंभीर हो कर ताका। ''तुम दोनों का यह बार-बार बच्चों को अकेले छोड़ना बिल्कुल ठीक नहीं है।'' फिर भयातुर आंखों से कुछ आगाह करती हुई वह बोली, ''कभी जिंदगी भर को पछताना पड़ सकता है!''

रीछनी की बात सुनते ही सभी के दिल भय व संशय से धड़क उठे। कुछ क्षण भयावह चुप्पी छाई रही। सबके चेहरों पर एक अजीब-सी मायूसी पुत गई थी।

कुछ देर बाद रीछ ने अपना गला साफ किया, फिर अपनी भारी व घरघराती आवाज से उस मनहूस चुप्पी को तोड़ा। शेर पर एक गंभीर नजर गड़ाते हुए उसने कहा, ''ये ठीक कह रही हैं। जंगल में आदमियों की आवाजाही कितनी बढ़ गई है!''

ये सब बातें सुन कर शेरनी विचलित हो उठी। उसका हृदय आशंकाओं से भर उठा। एक घबराहट भरी कांपती हुई आवाज में वह शेर से बोली, ''चलो भागो! अब एक पल भी रुकना ठीक नहीं है।''

चलते-चलते शेर विकल-सा होकर भालू को देखते हुए बोला, ''हम अपनी कंदरा में सुरक्षित हैं या बाहर जंगल में, अब तो यही नहीं पता है!'' शेर ने रीछनी को कातर हो कर ताका और फिर बोला, ''बच्चे जब गुफा पर रहते हैं तो डर लगता है कि हमारे पीछे जाने क्या घट जाए और जब साथ होते हैं, तब भी भय बना रहता है। यदि हम कभी किसी मुसीबत से घिर गए तो बच्चे अपने को कैसे बचा पाएंगे!''

''अब अपने को अधिक चिंता में मत डालो।'' भालू ने शेर को कुछ सांत्वना दी। ''जब ऐसा होगा, देखा जाएगा। अभी तो शांति से गुफा पर जाओ।''



अब हर मौसम तो फूल खिलने का मौसम नहीं होता है और न हर दिन पतझड़ बना रहता है। यह बात जानवरों के जीवन में भी उतनी ही सच है, जितनी मनुष्यों के जीवन में; लेकिन जानवर इसे इतनी सरलता से नहीं समझ पाते। वे पुराने दिनों की घटनाओं के निष्कर्ष से न वर्तमान को जोड़ पाते हैं ओर न वर्तमान के गुणा-भाग से भविष्य की संभावनाओं का ही अनुमान लगा पाते हैं।

दूसरी बात, जंगल में स्वाभाविक रूप से नित्य घटित हो रही बातें वन्यजीवों का ध्यान उतना आकर्षित नहीं कर पाती हैं, जितनी कि कोई तनिक-सी भी अस्वाभाविक घटना अथवा अकारण कोई फेरबदल या कि कोई ऐसी बात जिससे कि वे पूर्व परिचित न हों।

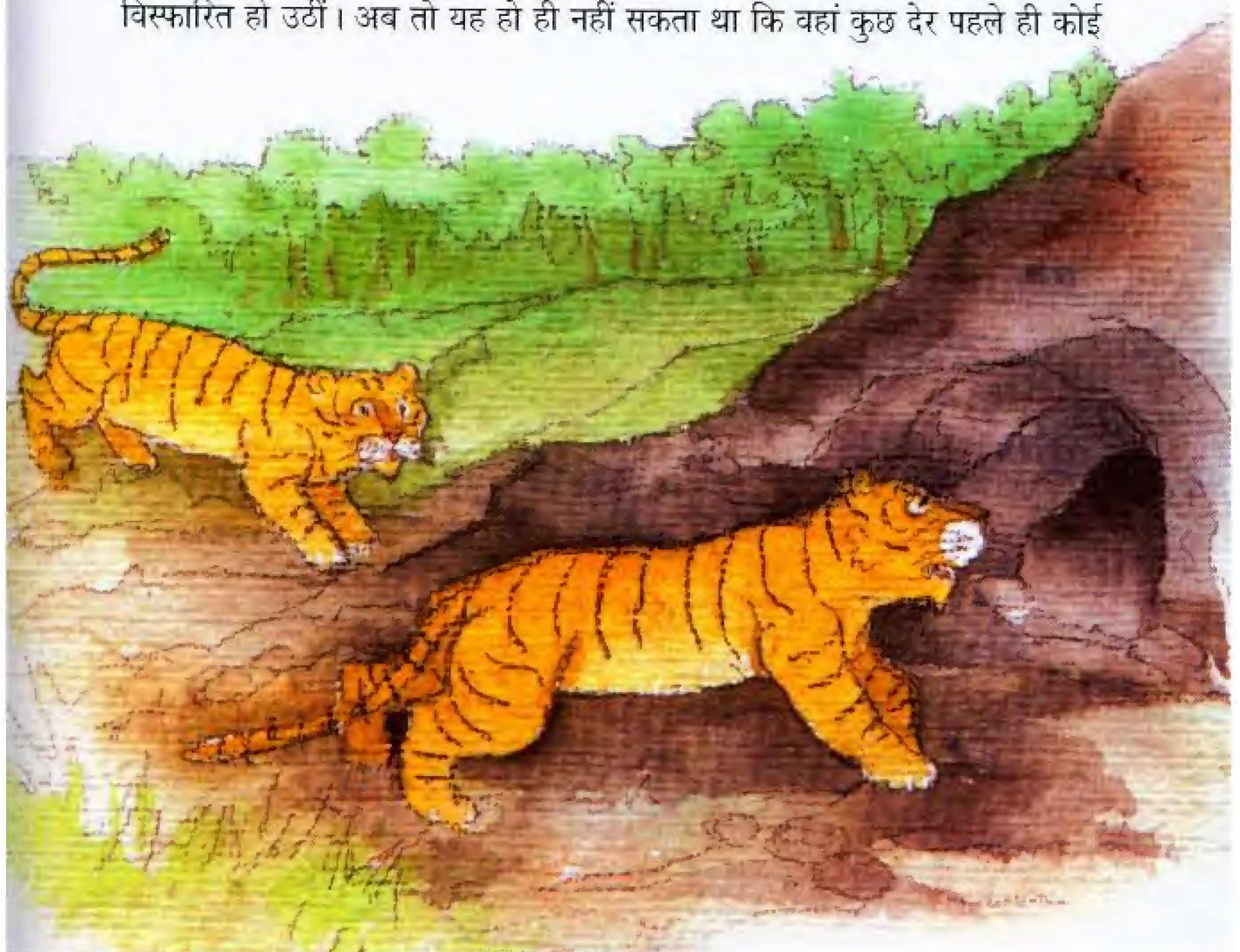
उस दिन शेर और शेरनी, रीछ के यहां से दोपहर में कुछ घबराए हुए जब अपनी कंदरा पर पहुंचे तो एक दूसरा ही आश्चर्य मुंह बाए वहां खड़ा था।

कंदरा के निकट आते ही शेर युगल नित्य की भांति कुछ दूरी पर रुक कर, चुपचाप खड़े हो कर पूरे माहौल का आकलन करने लगा। तभी शेर ने देखा कि घास जो किसी दबाव के कारण मुड़ गई थी, वह फिर-से धीरे-से ऊपर उठ कर सीधी हो गई। शेर का दिल संशय से भर उठा। उसने बहुत आहिस्ते से सिर घुमा कर शेरनी को देखा। शेरनी की सतर्क आंखों ने भी घास को ऊपर उठते हुए देख लिया था और वह भी सहम कर चारों ओर देखने लगी थी। वातावरण में एकदम सन्नाटा था! हवा तक नहीं हिल रही थी! स्पष्ट था कि कोई उधर से अभी-अभी गुजरा होगा जिसके पंजे या पांव तले घास दब गई होगी, जो बाद में सीधी हो गई।

शेर ने आंखों के संकेत से शेरनी को अपनी जगह ही खड़ी रहने को कहा। फिर चींटी की चाल से कदम उठा-उठा कर वह आगे बढ़ने लगा। अब कंदरा के अंदर वह सिर ऊंचा

करके देख सकता था। उसने झांका तो पाया कि बच्चे कंदरा में बेफिक्र होकर सो रहे हैं। उसने एक राहत की सांस ली और सिर हिला कर शेरनी को भी संकेत दिया कि बच्चे सुरक्षित हैं।

शेर अभी कुछ ही पग आगे और सरका होगा कि एक दूसरा पहले से भी अधिक खतरनाक आश्चर्य प्रकट हुआ। एक हरी पत्तियों वाली टहनी सामने ही टूटी पड़ी थी। शेर का दिल इतना घबराया कि वह खड़ा न रह सका। वहीं दिल थामते हुए वह चुपचाप जमीन पर बैठ गया। शेरनी ने शेर को धीरे से बैठते हुए देखा तो उसे समझते देर न लगी कि सब कुछ ठीक नहीं है। वह भी सरकते-सरकते शेर की बगल में आ कर बैठ गई। शेर ने संकेत से जब उसे हरी पत्तियों वाली टहनी दिखाई तो उसकी आंखें भी भय से विस्फारित हो उठीं। अब तो यह हो ही नहीं सकता था कि वहां कुछ देर पहले ही कोई



आया न हो। जंगल में कोई भी जानवर हरी टहनी तोड़ कर नहीं फेंकता। बंदर की कोई डार (ग्रोह) भी वहां दूर-दूर तक नहीं थी कि उनकी उछल-कूद से टहनी टूट कर नीचे आ गिरती।

स्पष्ट था कि वातावरण चेतावनी दे रहा था, जिसे शेर युग्म गंभीरता से समझ भी रहा था। कुछ देर तक दिल चीरने वाला सन्नाटा छाया रहा। शेर और शेरनी वैसे ही दम साधे मूर्त्तिवत बैठे प्रतीक्षा करते रहे कि कहीं कोई आहट हो, जिसे उसके चौकन्ने कान सुन पाएं अथवा कहीं कुछ भी हिले-डुले जिसे उनकी सतर्क आंखें देख पाएं, लेकिन जब कहीं से भी किसी उत्तेजना का आभास उन्हें न हुआ, तो वे दोनों क्रोध से गुर्राते हुए उठे, जिसका अर्थ भी साफ था कि अब भी समय है! जो भी, कहीं भी हो सामने आ जाए, लेकिन जब कहीं कोई हरकत न हुई तो दोनों धीरे-धीरे बढ़ते हुए कंदरा में दाखिल हुए। बच्चों को जगा कर कलेजे से लगाया और बड़ी देर तक उन्हें चूमते-चाटते रहे।

कुछ देर बाद शेर ने अवसाद भरी दृष्टि से शेरनी को ताकते हुए कहा, ''अब हमें यह कंदरा छोड़ देनी चाहिए!''

शेरनी ने सिर घुमा कर जब कंदरा की छत व दीवारों पर नजर दौड़ाई तो उसकी आंखें डबडबा आईं। उनकी कितनी ही यादें इस कंदरा से जुड़ी थीं। यहीं उसकी प्यार भरी रातें गुजरी थीं और कितने ही सुनहरे सपनों को इसी छत के नीचे बुना गया था। यहीं वह गर्भवती हुई थी और इसी के अंदर प्रसव वेदना सह कर एक दिन वह मां बनी थी। आज यह संसार छोड़ कर उसे चले जाना होगा! कहां?पता नहीं!

शेर ने जब शेरनी के मनोभावों को पढ़ा तो उसकी आंखें भी सजल हो उठीं। आंखों को कंधे से रगड़ कर पोंछते हुए भर्राई आवाज में उससे कहा, ''अब यहां पल भर भी रुकना ठीक नहीं है! इन संकेतों की अवहेलना हम नहीं कर सकते! किसी भी समय कुछ भी घट सकता है!''

''समझती हूं!'' शेरनी ने भी कंधे से रगड़ कर अपनी आंखें पोंछी। फिर आंसुओं को

पीते हुए बोली, "यही वह जगह है, जहां मेरी मां ने भी मुझे जना था।" शेर को देखती हुई वह फिर बोली, "मेरी मां ने बताया था कि उस रात बाहर बारिश हो रही थी और मेरे पिता जंगल में कहीं फंस गए थे।"

शेर ने सिर घुमा कर कंदरा के बाहर देखा। वही सब चिरपरिचित दृश्य था, जिसे वह नित्य बैठे-बैठे कंदरा के भीतर से देखा करता था।

धूप का टुकड़ा ठीक वहीं पड़ा था, जहां वह ऐसे ही जाड़ों की दोपहर में सदा हुआ करता था और जहां वह अकसर परिवार के साथ बैठ कर धूप सेंका करता था।



शेरनी भारी कदमों से गुफा में से बाहर निकल आई और बच्चों को भी साथ ही रहने का संकेत किया। शेर ने कंदरा सबसे बाद में छोड़ी। उसकी सांसों में अपनी कंदरा की महक अब भी ज्यों की त्यों बसी हुई थी।

"अभी तो दिन के कुछ पहर बाकी हैं! चलो रीछ के पास ही चलते हैं!" शेरनी ने सिर घुमा कर फिर-से चारों ओर देखा। आज उसे जंगल अजीब लगा। जैसे वहां वह खुद ही एक अजनबी हो! उसने सिर ऊपर उठा कर देखा। बादल के बड़े-बड़े काले टुकड़े तैर रहे थे। हवा की ठंड काटने लगी थी।

शेर अपने परिवार को ले कर जब रीछ के घर पहुंचा तो रीछ युग्म गुफा के बाहर ही अपने बच्चों को लाड़-प्यार कर रहा था। मां सदा की भांति अपने दोनों पैरों को आगे फैलाए बैठी थी और एक बच्चे को उन्हीं पैरों पर लिटाए मंत्रमुग्ध होकर बस निहारे जा रही थी! वैसे बच्चे की आंखें अभी खुली नहीं थीं, कि वह भी मां को देख पाता। दूसरे बच्चे को पिता दोनों हाथों में पकड़ कर अपने मुंह और नाक से चिपकाए हुए उसके कोमल शरीर की दुधहारी गंध ले रहा था।

शेर के कुनबे को देख रीछ युगल पहले तो कुछ विस्मित हुआ, फिर रीछ अपने बच्चे को हवा में उठाए-उठाए ही पुलक कर बोला, "यह तो बहुत अच्छा किया तुमने कि अब बच्चों को भी साथ ले कर निकले हो।" वह प्रसन्न हो कर बोला, "अच्छा किया जो तुम दोनों वापस आ गए! तुम्हारे जाने के बाद हम लोगों को भी कुछ अच्छा नहीं लग रहा था!"

इधर रीछ अपनी ही बातों में मगन था, उधर रीछनी से शेर और शेरनी के चेहरों पर छाई हुई उदासी भरी दहशत नहीं छिप सकी थी। सशंकित हो कर पूछा, "क्या बात है? तुम दोनों इतने मायूस और ढीले क्यों बने हुए हो?"

रीछनी की बात सुन कर रीछ का भी ध्यान दोनों शेरों के चिंतातुर और उदास चेहरों की ओर गया। उसने एकदम से पूछा, "सब ठीक तो है?"

"हम तुम्हारे सामने हैं, तो सब ठीक ही है!" शेर ने एक फीकी और मायूस-सी हंसी हंस कर कहा और फिर बगल में खड़ी शेरनी को देखने लगा।

"इस तरह पहेली मत बुझाओ।" रीछनी अधीर हो रही थी। "तुम सब का ऐसा चेहरा देख कर मेरा तो दिल धड़कने लगा है।"

"तुम लोग ठीक ही समझ रहे हो। सब कुछ सामान्य नहीं है!" शेरनी, रीछनी और रीछ को एक डरे हुए चेहरे से देखती हुई डूबती-सी आवाज में बोली। "अपने पीछे हम अपनी कंदरा सदा के लिए छोड़ आए हैं!" कहती हुई शेरनी कातर हो कर कहीं और देखने लगी।

रीछ युग्म को तो जैसे पाला मार गया। उनके चेहरे भयाक्रांत हो उठे। किसी के भी कंठ से कोई बोल न फूटा। शेर और शेरनी शिथिल हो कर जहां खड़े थे, वहीं बैठ गए।



शेर ने धीरे-धीरे सारी बातें भालू परिवार को बताईं। भालू परिवार काठ का मारा हुआ-सा सब सुनता रहा। कुछ क्षण पश्चात् भालू ने एक लंबी सांस छोड़ते हुए उस मरघट से पसरे सन्नाटे को तोड़ा। वह कुछ भरोसा-सा दिलाते हुए बोला, "कोई बात नहीं! हमारी कंदरा तो है न!" फिर रीछनी की ओर देख कर शांत भाव से बोला, "मैं और शेर कंदरा के बाहर पहरे पर रहा करेंगे और तुम दोनों मां अपने बच्चों को ले कर अंदर रहोगी।" कह कर भालू, शेर और शेरनी को देखने लगा, जैसे उनके चेहरों से अपने विचार पर उनकी भी प्रतिक्रिया जानना चाह रहा हो।

शेरनी गुमसुम बैठी थी। उसने अब अपना सिर आगे फैले हुए अपने दोनों पंजों पर रख लिया था। एक टूटन भरी थकान और हताशा उसके चेहरे से स्पष्ट झलक रही थी। उधर शेर भी चिंता का बोझ अपने चेहरे पर धारे कहीं शून्य में ताक रहा था। फिर दृष्टि जमीन पर गड़ाते कुछ बोझिल मन से बोला, "ऐसा कैसे हो सकता है! हम सब के सब खतरे में पड़ जाएंगे!"

कुछ देर तक फिर एक घुटन भरी खामोशी बर्फ की तरह जमी रही। शेर ने ही फिर से उस बर्फ को तोड़ा। लगा कि जैसे उसने मन ही मन कोई निश्चय कर लिया हो! एक दृढ़ निश्चय...! बोला, "हम बाहर जंगल में ही रहेंगे।" रीछ पर एक शेरत्व भरी नजर डालते हुए उसने निर्णयात्मक स्वर में कहा, "जब कोई गुफा मिल जाएगी, तब देखा जाएगा।"

शेर की बात सुनते ही रीछ सकते में आ गया। रीछनी भी और अधिक भय खाती हुई अपने बच्चे को गोद में समेटने लगी, जैसे कुछ अनहोनी होने ही वाली हो!

रीछ ने शेर को आक्रांत होते देखा और आने वाली भयावह स्थिति के लिए आगाह करने लगा, "शीत के कठोर दिन आ गए हैं! पहाड़ों से बर्फानी हवाएं आ रही हैं!" फिर सिर ऊपर उठा कर आकाश को ताकते हुए कहने लगा, "और ऊपर देख रहे हो! आज कितने घने बादल घिरने लगे हैं!"

शेर और शेरनी दोनों ने एक साथ आसमान की ओर सिर उठा कर देखा। काले बादल अब एक जुट हो चुके थे। रुक-रुक कर गरजने भी लगे थे।

रीछनी कुछ दुःख भरी और डरी-सी आवाज में बोली, "जाड़े के दिनों की वर्षा अब किसी भी क्षण हो सकती है। और यह जाड़ा हाड़-मांस सब जमा देगा।" फिर एक आहभरी उच्छ्‌वास लेकर वह कहने लगी, "और ऐसे में तुम कहते हो, इन नन्हे बच्चों को ले कर बाहर जंगल में पड़े रहोगे!"

"हम और कर भी क्या सकते हैं? शेर शरणार्थी भी तो नहीं बन सकता है न!" शेर अपनी गरिमा बचा भी रहा था और अंदर कहीं टूट भी रहा था। जंगल की ओर एक दुःखभरी दृष्टि दौड़ाते हुए वह धीरे-से बोला, "लेकिन इतना समझ लो कि अब हम अपने ही जंगल में अनाथ हैं!"

शेर की बातें सुन कर भालू का दिल भर आया। उसकी आंखें नम हो गईं। वह सोचने लगा कि क्या सचमुच कोई ऐसा भी समय आ सकता है, जब एक शेर जंगल में खुद को ही यतीम महसूस करने लगे।

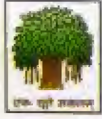


एकाएक भालू ने देखा कि शेर अपने परिवार सहित उठ कर जा रहा है और बूंदें पड़ने लगी हैं। बादल एकदम से गहरा गए थे और अंधेरा-सा छाने लगा था। भालू आतंकित हो कर शेर को रोकने लगा, "देखो, बड़ी-बड़ी बूंदें पड़ने लगी हैं और पानी बरसने वाला है। ओले भी पड़ सकते हैं!" लेकिन जब शेर फिर भी नहीं रुका तो वह जोर से चीखा, "अरे, सुन रहे हो! ऐसे में बच्चों को ले कर बाहर क्यों जा रहे हो?"

शेर परिवार जैसे बहरा हो गया था। सभी धीरे-धीरे चलते हुए जंगल में समा गए कि जैसे वे जंगल पर अपना अधिकार छोड़ने को बिल्कुल ही तैयार न हों। भालू घूम कर रोता हुआ-सा रीछनी से बोला, "तुम उसे रोकती क्यों नहीं हो?"

रीछनी निश्चल-सी बस पत्थर बनी बैठी रही। वह बल-बल रोए जा रही थी और उस हरे-भरे घने जंगल को देखे जा रही थी, जिसमें अभी-अभी शेर परिवार खो गया था और जिसकी पत्तियों को मूसलाधार बारिश अब धोने लगी थी। तभी वह निढाल हो कर घूमी और भालू के सीने पर सिर रख कर फूट-फूट कर रोने लगी।





₹ 50.00 ISBN 978-81-237-6003-2

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया